समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Tuesday, 22 September 2026

मुंबई का 350 ग्राम का 'नैनो-प्रीमी' बच्चा 124 दिन बाद NICU से स्वस्थ होकर घर लौटा

Publisher

Published on 21 Nov 2025

मुंबई में चिकित्सा जगत में एक चमत्कार जैसा क्षण हाल ही में देखने को मिला है, जब सिर्फ **350 ग्राम** के वजन का एक नवजात बच्चा — जिसे डॉक्टरों ने 'नैनो-प्रीमी' कहा — **124 दिन तक NICU** (नियोनेटल इंटेंसिव केयर यूनिट) में जीवित रहने के बाद आखिरकार अपने घर वापस लौटा। यह घटना न सिर्फ उसके परिवार के लिए, बल्कि चिकित्सा क्षेत्र के लिए भी बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है।

यह बेहद कम वजन वाला बच्चा छह महीने से भी पहले, लगभग 25 हफ्तों की गर्भावधि पर जन्मा था। उसके जन्म के समय हालत इतनी नाजुक थी कि उसे एक सेब से भी हल्का और एक वयस्क की हथेली से भी छोटा बताया गया। जन्म के तुरंत बाद डॉक्टरों ने उसे इंटुबेट किया और सर्फ़ैक्टेंट थेरेपी दी, ताकि उसके नाजुक फेफड़ों को सांस लेने में सहायता मिल सके।

NICU में बिताए गए उन 124 दिनों में यह बच्चा कई गंभीर स्वास्थ्य चुनौतियों का सामना करते हुए भी हिम्मत नहीं हारा। उसे श्वसन संकट सिंड्रोम, वायरल संक्रमण, न्यूमोनिया और आंखों की समस्याएं जैसी जटिलताएं हुईं, लेकिन मेडिकल टीम ने सबसे उन्नत देखभाल, संक्रमण नियंत्रण, रक्त पतला करना, इंसुलिन और अन्य आवश्यक हस्तक्षेपों द्वारा हर कदम पर उसका साथ दिया।

डॉक्टरों के मुताबिक, हर दिन एक नई लड़ाई थी। उन्होंने उच्च-स्तरीय वेंटिलेशन, संक्रमण का इलाज, शर्करा स्तर को नियंत्रित करना और उसके मस्तिष्क और आंखों की निगरानी का काम किया। मानसिक ओर से भी यह एक चुनौतीपूर्ण सफर था, क्योंकि छोटे बच्चों में ऐसे जटिल मामलों में लंबी अवधि तक जीवित रहने की संभावनाएं बहुत कम होती हैं।

लेकिन इस बच्चे ने उम्मीद को कभी नहीं छोड़ा। 1 नवंबर को, 124 दिन बाद, उसे अस्पताल से डिस्चार्ज कर दिया गया। डिस्चार्ज के समय उसका वजन लगभग **1.8 किलोग्राम** तक पहुंच गया था, और दाइमी मापों में उसकी लंबाई लगभग 41.5 सैंटीमीटर और सिर का परिधि 29 सेमी थी। चिकित्सा परीक्षणों में यह पाया गया कि वह अपनी उम्र के लिहाज से नर्वस सिस्टम के लिहाज से सामान्य है।

Surya हॉस्पिटल, Santa Cruz (मुंबई) के वरिष्ठ नियोनेटोलॉजिस्ट डॉ. हरि बालासुब्रमणियन ने इस उपलब्धि को 'चमत्कार' कहा। उन्होंने कहा कि इस तरह के मामूली आकार के बच्चों की जीवित रहने की संभावना बहुत कम होती है, और इस मामले में मेडिकल केयर, टीम की मेहनत और परिवार की निरंतर देखभाल ने मिलकर अद्भुत परिणाम दिए हैं।

Surya हॉस्पिटल के महाप्रबंधक डॉ. भूपेंद्र अवस्थी ने बताया कि यह बच्चा "भारत में अब तक का सबसे छोटा जीवित शिशु" हो सकता है। इस बात की पुष्टि अन्य विशेषज्ञों ने भी की है। उदाहरण के लिए, J.J. हॉस्पिटल (राज्य संचालित) के NICU प्रमुख डॉ. प्रशांत माने का भी यह मानना है कि 350 ग्राम वजन का यह बच्चा संभवतः अब तक के सबसे हल्के जीवित शिशुओं में से एक है।

डॉक्टरों ने यह भी बताया कि यह बचपन का सफर न केवल चिकित्सा क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण है बल्कि माओं और भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्रेरणा है। नवीनतम नियोनेटल देखभाल तकनीकों, बेहतर प्रेगनेंसी मॉनिटरिंग और अस्पतालों में उच्च-स्तरीय NICU से यह स्पष्ट होता है कि ऐसा संघर्ष शायद अब अधिक आम हो सकेगा।

परिवार के लिए यह दिन भावनाओं से भरा रहा। माता-पिता की आँखों में खुशी के साथ-साथ हृदयस्पर्शी राहत थी कि उनका नन्हा बच्चा जटिल शुरुआत के बावजूद सामान्य विकास की राह पर है। डॉक्टरों ने भविष्य के स्वास्थ्य और विकास को ध्यान में रखते हुए नियमित जांच की सलाह दी है, लेकिन फिलहाल उनकी उपलब्धि नियोनेटल केयर की प्रगति का जीता-जागता उदाहरण है।

मेडिकल समुदाय ने भी इस केस का बहुत स्वागत किया है, और इसे बच्चों की देखभाल में हो रही उन्नति का प्रतीक माना है। यह सिर्फ एक बच्चे की जीत नहीं है, बल्कि उन हजारों परिवारों की आशा है जो प्रीमेच्योर जन्म के बाद जीवन के पहले कुछ महीनों में लंबे संघर्ष से गुजरते हैं।

इस नैनो-प्रीमी शिशु की कहानी हमें याद दिलाती है कि जीवन की शुरुआत कितनी भी नाजुक क्यों न हो, बेहतर चिकित्सा देखभाल, निरंतर समर्थन और उम्मीद से उसे नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया जा सकता है। यह एक प्रेरणा है, एक चमत्कार है — और यह बताता है कि विज्ञान और मानव भावना मिलकर असंभव को संभव बना सकते हैं।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.